आत्मिक युद्ध

आत्मिक युद्धः पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना।

II. युद्ध की मांगें:

क. एक युद्ध की कई मांगें होती हैं।

ख. एकता की मांग।

ग. आज्ञाकारिता की मांग।

कक्षा #२:

II. युद्ध की मांगें:

घ. पीड़ा और बलिदान की मांग।

ङ. साहस और प्रतिबद्धता की मांग।

च. शत्रु के ज्ञान की मांग।

III. एक सैनिक के हथियार और कवच:

क. आत्मिक युद्ध की तैयारी की अनिवार्यता।

कक्षा #३:

III. एक सैनिक के हथियार और कवच:

ख. आत्मिक युद्ध के रक्षात्मक हथियार।

कक्षा #४:

III. एक सैनिक के हथियार और कवच:

ग. आत्मिक युद्ध के आक्रामक हथियार।

कक्षा #५:

IV. आत्मिक युद्ध के साथ सेवकाई के अनुभव।

परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

आत्मिक युद्धः परीक्षा
संभावित २० अंकीय प्रश्न

१) आत्मिक युद्ध में एकता की मांग की चर्चा कीजिए (पृष्ठ २८६,२८७)।

२) आत्मिक युद्ध में सभी का सबसे बड़ा बचाव क्या है? उस बचाव का अर्थ स्पष्ट करें (पृष्ठ २९७)।

३) यह दिखाने के लिए मत्ती ४:४-१० का प्रयोग करें कि कैसे परमेश्वर के वचन का उपयोग मसीही सैनिक को बहुत मज़बूत बनाता है (पृष्ठ ३०१)।

संभावित १० अंकीय प्रश्न

१) शैतान आक्रामक या रक्षात्मक है? अपने उत्तर में पवित्रशास्त्र का एक सन्दर्भ शामिल करें (पृष्ठ २८८)।

२) एक मसीही सैनिक का मुख्य आक्रामक हथियार और रक्षात्मक हथियार क्या है (पृष्ठ २९१,२९२)?

३) क्रियाशील मसीही जीवन का निर्माण करने वाली चार प्रमुख गतिविधियाँ कौन-सी हैं? पवित्रशास्त्र का एक सन्दर्भ शामिल करें (पृष्ठ २९३)।

४) मत्ती ५:८ (पृष्ठ २९६) का उपयोग करके एक मसीही सैनिक के लिए पवित्रता के महत्व की व्याख्या करें।

५) इफिसियों ६:१२ (पृष्ठ २९८) में "मल्लयुद्ध" शब्द को परिभाषित करें।

६) छुटकारे की सेवकाई और पवित्र आत्मा के बीच सम्बन्ध को दर्शाने के लिए एक पवित्रशास्त्र का प्रयोग करें (पृष्ठ ३०३)।

आत्मिक युद्ध

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना

क. आत्मिक युद्ध और सेवकाई

१. जिस बात से शैतान सबसे ज़्यादा घृणा करता है वह है सुसमाचार का प्रचार। सुसमाचार का प्रचार वह चीज़ है जो मनुष्यों को परिवर्तित करता है (जिससे वह घृणा करता है), और राज्य को वापस परमेश्वर के पास जीत लेता है (जिससे वह और भी अधिक घृणा करता है)।

२. इस प्रकार, आत्मिक युद्ध और सेवकाई स्वाभाविक रूप से एक साथ चलते हैं। वे सेवक जो आत्मिक युद्ध के लिए तैयार नहीं हैं, स्वयं को बड़े खतरे में डाल देते हैं। आत्मिक युद्ध के लिए तैयार किए गए सेवकों को बड़ी विजय के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

लेखक का उदाहरण:

निम्नलिखित पत्र एक सेवक द्वारा लिखा गया है जो न्यू गिनी के जंगलों में कार्य करता था। उसने घर पर दोस्तों को ये शब्द लिखे:

दोस्त, लड़ाई के बीच में होना, शैतान की सबसे भारी पुरानी बंदूकें निकलना, उसे निराशा, बदनामी, बीमारी के साथ अपने पास रखना बहुत अच्छा है। वह गुनगुने लोगों पर समय बर्बाद नहीं करता। जब कोई साथी उसे मार रहा होता है तो वह और ज़ोर से मारता है। आप हमेशा अपने प्रहार के वजन को वापस लगने वाले झटके से माप सकते हैं। जब आप बुखार में होते हैं और अपनी आखिरी ताकत लगा रहे होते हैं, जब आपके कुछ धर्मांतरित लोग पीछे हट जाते हैं, जब आपको पता चलता है कि आपके सबसे विश्वासयोग्य लोग आपको केवल मूर्ख बना रहे हैं, जब आपके पत्र रुक जाते हैं, और कुछ आपके पत्र का उत्तर ही नहीं देते, तो तब क्या यह शोक करने का समय है? नहीं साहब। यही वह समय है जब विराम को बाहर निकालकर हाल्लेलुय्याह चिल्लाया जाता है! इससे शैतान को तकलीफ पहुँचती है और वह इसे वापस ले लेता है। स्वर्ग युद्धों को झुक कर देख रहा है। क्या वह इसके साथ रहेगा? और जब वे देखते हैं कि हमारे साथ कौन है, वे असीमित भंडार, असीमित संसाधनों को देखते हैं, वे विफलता की असंभवाना को देखते हैं, परन्तु जब हम भागते हैं तो वे कितने घृणित और दुखी होंगे। परमेश्वर को महिमा मिले! हम भागने वाले नहीं हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख. इस पाठ्यक्रम के विषय।

लेखक की टिप्पणी:

हम एक आत्मिक युद्ध में हैं। हम इस पाठ्यक्रम में उस युद्ध के लिए स्वयं को तैयार करने का प्रयास करेंगे। हम यह सीखने की कोशिश करेंगे कि हम अपने अधिकारी, मसीह के लिए बेहतर सैनिक कैसे बनें।

१. पाठ्यक्रम को तीन खंडों में बांटा जाएगा:

क. युद्ध की मांगें।

ख. एक सैनिक के हथियार और कवच।

ग. सेवकों के वास्तविक अनुभव।

२. पूरे पाठ्यक्रम के दौरान, इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि आत्मिक युद्ध में शामिल होना सभी मसीहियों के लिए एक आवश्यक कार्य है, लेकिन विशेष रूप से सेवकों के लिए। वास्तव में, यह उन सभी लोगों के लिए एक आवश्यक कार्य है जो सुसमाचार का प्रचार करके शत्रु के इलाके में प्रवेश करने को तैयार हैं।

क. इस पाठ्यक्रम के अंत में, हम आत्मिक युद्ध के कुछ पहलुओं से सम्बंधित कक्षा में होने वाली चर्चा को बढ़ावा देने के लिए सेवकों के कुछ अनुभवों का उल्लेख करेंगे।

ख. अकसर, सेवक दो मुख्य कारणों से दूसरों की तुलना में अधिक आत्मिक युद्ध का अनुभव करते हैं:

१) वे लड़ाई में सबसे आगे होते हैं और सबसे ज़्यादा उन पर हमला किया जाता है।

२) सेवकाई के कई क्षेत्रों पर (अधिक निर्जन और पुरानी जगह में), शैतान की ताकतें बहुत अधिक स्पष्ट होती हैं। पश्चिमी देशों की तुलना में, जादू टोना और मूर्तिपूजा युद्ध को और अधिक दृश्यमान बनाते हैं।

टिप्पणियाँ -

II. युद्ध की मांगें

क. युद्ध की कई मांगें होती हैं।

१. युद्ध की वास्तविकता।

क. यद्यपि हमारा "आरामदायक" मसीही विश्वास इसे न पहचाने, फिर भी एक आत्मिक युद्ध हो रहा है। यह युद्ध वास्तविक और निरंतर है। यह आरामदायक, आसान मसीही जीवन के लिए अनजान है जिसे बहुत से लोग अकसर जी रहे होते हैं। यह सुसंगत है, जैसा कि पौलुस ने कहा, "मसीह यीशु के एक उत्तम सैनिक के समान यातनाएँ सहना" (२ तीमुथियुस २:३)।

ख. कुछ हद तक, एक मसीही के लिए इस युद्ध से बचना संभव है। अगर वह शत्रु को परेशान नहीं करता है, तो वह (कुछ समय के लिए) जीने में सक्षम हो सकता है जैसे कि कोई युद्ध चल ही नहीं रहा हो। हालाँकि, शत्रु अंततः उस पर काबू पा लेगा क्योंकि वह तैयार नहीं है।

१) एक मसीही सैनिक के रूप में, प्रत्येक विश्वासी को आत्मिक युद्ध में भाग लेने के लिए एक सचेत निर्णय लेने की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करना होना चाहिए।

२) पौलुस के शब्दों को सुनें (२ तीमुथियुस २:४):

"ऐसा कोई भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको साधारण जीवन के जंजाल में नहीं फँसाता क्योंकि वह अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिए यत्नशील रहता है।"

२. यह खंड आत्मिक युद्ध की वास्तविकता की हमारी स्वीकृति की मांग करता है और कुछ बुनियादी मांगों को सूचीबद्ध करता है जिसकी वास्तविकता के अधीन सभी मसीही हैं।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि तब क्या होगा यदि आप ऐसे क्षेत्र में रहते हों जहाँ एक युद्ध चल रहा हो, लेकिन आपने इसे अनदेखा करने का प्रयास किया हो और ऐसे अपने जीवन को व्यतीत कर रहे हों जैसे कि यह अस्तित्व में कभी नहीं था। जब मसीही आत्मिक युद्ध के सम्बन्ध में ऐसा ही करते हैं, तब क्या होता है?

टिप्पणियाँ -

ख. एकता की मांग।

१. एक सेना के लिए एक लड़ाई हारने का सबसे पक्का तरीका यह है कि स्वयं उनके बीच में फूट पड़ जाए। जैसा कि यीशु ने कहा था, "यदि किसी राज्य में अपने ही विरुद्ध फूट पड़ जाए तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकेगा" (मरकुस ३:२५)।

क. एकता में ताकत होती है (सभोपदेशक ४:९-१२ देखें)।

ख. युद्ध में एक प्रभावी रणनीति शत्रु में फूट डालना है।

१) शैतान अकसर इस रणनीति का उपयोग अपनी शत्रु, कलीसिया के विरुद्ध करता है।

२) दुर्भाग्य से, अकसर कलीसिया इससे बच नहीं सकती।

२. युद्धों के दौरान हमने उन लोगों के बीच एकता देखी है जो किसी अन्य तरीके से एकजुट नहीं हो सकते थे।

लेखक का उदाहरण:

प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ सहयोगी थे। शत्रु, जिन्हें किसी अन्य तरीके से एकजुट नहीं किया जा सकता था, ने युद्ध के बीच में एकता को स्थापित किया।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

क. मसीहियों के बीच लड़ाई कुछ हद तक, शैतान और कलीसिया के बीच मौजूद आत्मिक युद्ध की पहचान की कमी का परिणाम है।

ख. अकसर हम पाते हैं कि जहाँ युद्ध अधिक स्पष्ट है, वहाँ मसीहियों को एक होना बहुत आसान लगता है।

ग. हम कह सकते हैं कि युद्ध में एकता की मांग होती है और एकता की मांग है कि युद्ध की स्पष्ट रूप से पहचान की जाए।

लेखक की टिप्पणी:

एकता का यह सिद्धांत उन पहली बातों में से एक है जिस पर मैंने एक सेवकाई के रूप में ध्यान दिया था। विभिन्न प्रकार के मसीहियों के बीच बहुत अधिक एकता थी। उनके पास कोई विकल्प नहीं था। युद्ध बहुत निकट था। मसीहियों ने देखा कि उन्हें एक-दूसरे की कितनी आवश्यकता है।

यही सिद्धांत उत्पीड़न के क्षेत्रों के बीच में भी देखा जा सकता है। जब सताए हुए मसीही एकता में होते हैं तब उन्हें कोई समस्या नहीं होती है।

चर्चा विषय

आपका शत्रु कौन है? क्या आप विभिन्न सैद्धान्तिक विश्वासों वाली अन्य बढ़ती हुई कलीसियाओं या मसीही कलीसियाओं को अपना शत्रु मानते हैं? यदि हम अपने मतभेदों को दूर करके शैतान के प्रयासों के विरुद्ध खड़े होने के लिए एकजुट हो जाएँ तो क्या होगा?

ग. आज्ञाकारिता की मांग।

१. आज्ञाकारिता की मांग एकता की मांग से बहुत ज़्यादा सम्बंधित है। एक सेना का अगुवा तब तक सफ़ल नहीं हो सकता जब तक कि उसके सैनिक आदेशों का पालन न करें।

२. शैतान इस सिद्धांत को समझता है। वह समझता है कि जब मसीह के सैनिक उसकी आज्ञा का पालन करते हैं तो वह सफ़ल नहीं हो सकता।

३. विजय आत्मा की अगुवाई के साथ हमारे सहयोग पर निर्भर करती है। यह शैतान के विफ़ल होने पर निर्भर नहीं करता है। यह कलीसिया पर निर्भर करता है जो विजयी (यीशु मसीह) की बातों को सुनती है। शैतान के हाथ बंधे हुए हैं। अगर हम आज्ञा मानें, तो वह हमें रोक नहीं सकता।

टिप्पणियाँ -

४. इस प्रकार, मसीहियों के रूप में हम आक्रामक हैं। शैतान बचाव की मुद्रा में है।

क. ध्यान दें कि मत्ती १६:१८ में यीशु अधोलोक के फाटक का उल्लेख करते हैं। फाटक एक रक्षात्मक संरचना हैं। उसकी एक ही रणनीति है कि हम स्वयं ही हार जाएँ।

ख. शैतान हमें निम्नलिखित तरीकों से स्वयं ही हराने की कोशिश करता है:

१) हमें अपने आस-पास के युद्ध की वास्तविकता से अनजान बनाकर (हमें आरामदायक सांसारिक और आत्मिक जीवन प्रदान करके)।

२) परमेश्वर की सेना के भीतर फूट को डालकर।

३) सेना के शासक अधिकारी की आज्ञा को ना मानकर।

चर्चा विषय

उन सैनिकों का क्या होता है जो एक सैन्य युद्ध में शत्रु के विरुद्ध आगे बढ़ने के अपने शासक अधिकारी की आज्ञा का पालन करने से इनकार करते हैं? इस अवधारणा को मसीही जीवन से जोड़िए और उस पर चर्चा कीजिए।

घ. पीड़ा और बलिदान की मांग।

१. एक सैनिक को पीड़ा क्यों सहनी पड़ती है? क्योंकि वह **सक्रिय सेवा** में है (२ तीमुथियुस २:३,४ देखें)।

लेखक की टिप्पणी:

युद्ध सुखद नहीं होता है। सैनिक महँगा खाना नहीं खाते। वे वातानुकूलित कमरों में नहीं सोते जिनमें रूम सर्विस और टेलीविजन सेट हों।

क. "युद्ध नरक होता है" जैसा कि एक प्रसिद्ध सेनापति ने कहा। मसीही के लिए, युद्ध नरक के विरुद्ध संघर्ष है।

ख. युद्ध का परिणाम आरामदायक जीवन नहीं होता (लूका ६:२४-२६ देखें)। इसका परिणाम पीड़ा और बलिदान होता है (२ तीमुथियुस ३:१२ देखें)। यह पौलुस के द्वारा कही गयी बात है जिसे वह २ तीमुथियुस २:३,४ में बताना चाहते थे।

टिप्पणियाँ -

२. हमारे जीने के तरीके के सम्बन्ध में इन विचारों के क्या निहितार्थ हैं? युद्ध के समय कोई देश अपना पैसा कैसे खर्च करता है? क्या यह इसे सुख-विलास पर खर्च करता है? या केवल उस पर जो युद्ध के लिए आवश्यक है?

लेखक की टिप्पणी:

युद्ध के समय देश के नागरिक को यह कहते हुए सुनना असामान्य नहीं होगा, "हमें अब चीज़ों को त्यागना चाहिए क्योंकि हम युद्ध में हैं।" मसीही होने के नाते हमें इन शब्दों को कितना अधिक कहना और जीना चाहिए।

३. किसी ने एक बार कहा था कि वह विश्वास जिसकी कीमत कुछ भी नहीं है, उसका कोई मूल्य या महत्त्व भी नहीं है।

क. सुसमाचार मुफ़्त है। हम स्वर्ग में प्रवेश को कमा नहीं सकते। हालाँकि, यह महँगा है क्योंकि हम जो अपना नहीं है उसे रखने की कोशिश करते हैं। हम अपने जीवन और इच्छाओं को युद्ध में छोड़ देने के बजाय, उन्हें पकड़ने की कोशिश करते हैं। सैनिकों को पीड़ा सहनी पड़ती है। यह युद्ध की प्रकृति है।

ख. पौलुस ने तर्क दिया कि एक सैनिक के रूप में उनकी स्थिति उसके कारण मान्य थी जो उसने झेली थी (१ कुरिन्थियों ४:९-१३ और २ कुरिन्थियों ११:२३-२८)।

१) ध्यान दें कि कैसे पौलुस ने कुरिन्थुस के सैनिकों को प्रोत्साहित किया (जैसे उन्होंने २ तीमुथियुस २:३-४ में तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया) कि वह उसकी आज्ञा का पालन करें (१ कुरिन्थियों ४:१६)।

२) हमें अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए, "क्या हम पौलुस की आज्ञा का पालन कर रहे हैं जिसने मसीह यीशु की आज्ञा का पालन किया?" "क्या हम उन सैनिकों का जीवन जी रहे हैं जो युद्ध में हैं या हम उन नागरिकों का जीवन जी रहे हैं जो युद्ध में भाग नहीं लेते हैं?" याद रखें, केवल सैनिकों को ही पदक मिलते हैं। नागरिक केवल सैनिकों की सराहना करते हैं!

चर्चा विषय

युद्ध के दौरान बलिदान और पीड़ा के सिद्धांत पर चर्चा करें क्योंकि यह हमारी दैनिक जीवन शैली और भण्डारीपन से सम्बंधित है।

टिप्पणियाँ -

ङ. साहस और प्रतिबद्धता की मांग।

१. एक सैनिक अपने अधिकारी और अन्य सैनिकों के लिए प्रतिबद्ध होता है। अगर वह प्रतिबद्ध नहीं है, तो वह विचलित हो जाएगा।

क. इसलिए, पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि "साधारण जीवन के जंजाल में स्वयं को न फसायें" (२ तीमुथियुस २:४)।

ख. एक मसीही सैनिक को अपनी दृष्टि अपने अधिकारी पर केन्द्रित रखनी चाहिए (इब्रानियों १२:२)। हम ध्यान दें कि इब्रानियों १२:२ के सन्दर्भ में हमें फिर से "बाधा पहुँचाने वाली प्रत्येक वस्तु को, और उस पाप को जो सहज ही हमें उलझाता है, झटक फेकने" का उपदेश मिलता है (१२:१)।

१) हालाँकि, संसार कहता है कि यह कट्टर है, मसीही सैनिक को एक मन का होना चाहिए।

२) उसे अपने अधिकारी के साथ अपने संचार में विचलित नहीं होना चाहिए (नीतिवचन ३:५,६ देखें)।

२. एक सैनिक साहसी होता है। जब शत्रु आगे बढ़ने लगे तो वह भाग नहीं सकता। उसके हथियार (इफिसियों ६:१३-१८ देखें) में उसकी पीठ की सुरक्षा के लिए कोई हथियार शामिल नहीं है। पीछे हटने का कोई प्रावधान नहीं है क्योंकि पीछे हटना स्वीकार्य नहीं है।

क. वास्तव में यदि रोमियों ८:३७, रोमियों ८:३१, फिलिप्पियों ४:१३, १ यूहन्ना ५:४, और याकूब ४:७ सभी सत्य हैं, तो पीछे हटने का कोई कारण नहीं है।

ख. मसीही सैनिक केवल तभी योग्य है जब वह पीछे मुड़कर न देखे (लूका ९:६२)।

चर्चा विषय

साहस और प्रभु में विश्वास के बीच सम्बन्ध पर चर्चा करें।
हम अपने साहस को कैसे विकसित और बढ़ा सकते हैं?

लेखक की टिप्पणी:

हमें अपने शत्रु के ज्ञान के विषय में पता होना चाहिए। MOTMOT पाठ्यक्रम, जिसका शीर्षक स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं है, शत्रु से अनभिज्ञ न होने के महत्व को प्रस्तुत करता है। अज्ञान विनाश की ओर ले जाता है। हमें अपने शत्रु और उसके तरीकों को जानना चाहिए ताकि हम उसके साथ युद्ध करने के लिए तैयार रहें।

टिप्पणियाँ -

III. एक सैनिक के हथियार और कवच।

लेखक की टिप्पणी:

हमें युद्ध में लड़ने के लिए बुलाया गया है (२ कुरिन्थियों १०:३-५)। मसीही होना एक सैनिक होना है। खासतौर पर उन लोगों के लिए इसे समझना कभी-कभी मुश्किल होता है जो पश्चिमी मसीही विश्वास के बीच में रहते हैं।

हमें २ कुरिन्थियों १०:३-५ में पौलुस द्वारा उपयोग किए गए कुछ शब्दों पर ध्यान देना चाहिए। वह **लड़ाई, हथियार, युद्ध, ढा देना, विनाश** और **पलटा लेने** जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

यह शान्ति का समय नहीं लगता। यह युद्धकाल है!

क. आत्मिक युद्ध की तैयारी की अनिवार्यता।

१. हम आत्मिक युद्ध की चर्चा तब तक शुरू नहीं कर सकते जब तक कि हम बाइबल के इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर लेते कि हम युद्ध में हैं। शत्रु वास्तविक है और वह हमला कर रहा है। हाँ, यह युद्ध का समय है, और हमें उस युद्ध में सैनिक बनने के लिए बुलाया गया है।

२. जब कोई सैनिक युद्ध के लिए तैयार होता है तो वह हथियार बांध लेता है।

३. जब एक सैनिक युद्ध के लिए जाता है तो वह अपने हथियार ले लेता है।

४. युद्ध के दौरान मसीही सैनिक को पता चलता है कि वह प्रमुख और विजयी सेना का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

५. मसीही सैनिक को समझना चाहिए कि उसकी लड़ाई आक्रामक और रक्षात्मक दोनों है।

क. आक्रामक।

१) नए नियम के अनुसार, मसीहियों के पास दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का अधिकार है (मरकुस १६:१७ देखें)।

२) सबसे मुख्य आक्रामक हथियार यीशु के नाम में आज्ञा देना है।

टिप्पणियाँ -

ख. रक्षात्मक।

१) मसीहियों के ऊपर शैतान द्वारा हमला किए जाने की भी संभावना है (१ पतरस ५:८,९ देखें)।

२) सबसे मुख्य रक्षात्मक हथियार एक विश्वासयोग्य और क्रियाशील मसीही जीवन है।

लेखक की टिप्पणी:

निम्नलिखित खंड आत्मिक युद्ध के हमारे रक्षात्मक और आक्रामक हथियारों को प्रस्तुत करते हैं।

हमारा मुख्य रक्षात्मक हथियार: एक क्रियाशील मसीही जीवन।

- मसीही जीवन जैसा कि प्रेरितों के काम २:४२ में पाया जाता है।
- धार्मिकता और पवित्रता।
- स्वयं की मृत्यु।

मुख्य आक्रामक हथियार:

- परमेश्वर का वचन।
- विश्वासी का अधिकार।
- यीशु मसीह का नाम।

ख. आत्मिक युद्ध के रक्षात्मक हथियार।

१. एक क्रियाशील मसीही जीवन (प्रेरितों के काम २:४२ के अनुसार)।

लेखक का उदाहरण:

एक अच्छा एथलेटिक प्रशिक्षक जानता है कि एक अच्छा आक्रमण एक अच्छे बचाव पर निर्भर करता है। मसीही का सबसे अच्छा बचाव उसका अपना मसीही जीवन है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

क. प्रेरितों के काम २:४२ के अनुसार, क्रियाशील मसीही जीवन के निर्माण में चार महत्वपूर्ण गतिविधियाँ शामिल हैं।

१) अच्छी शिक्षा और बाइबल का अध्ययन।

२) संगति।

३) रोटी तोड़ना।

४) प्रार्थना।

ख. अच्छी शिक्षा और बाइबल अध्ययन।

१) युद्ध के समय अज्ञान को क्षमा नहीं किया जाता है। युद्ध के समय में अज्ञानता का अर्थ आत्महत्या है। शत्रु इस बहाने का सम्मान नहीं करेगा, "मुझे नहीं पता था।"

२) सही सिद्धांत एक किले की दीवार की नींव के समान है।

३) बाइबल शिक्षण, बाइबल अध्ययन और बाइबल सीखना मसीही सैनिक की आवश्यक गतिविधियाँ हैं। उनके बिना वह अपना बचाव करने के लिए तैयार नहीं होगा।

ग. संगति।

१) संख्या में बल है (सभोपदेशक ४:१२ देखें)। एकता में ताकत है। अलग और विभाजित होना कमज़ोरी है।

क) एक सैनिक जो युद्ध के दौरान अपनी सेना से अलग हो जाता है वह एक ऐसा सैनिक होता है जो बहुत ख़तरे में होता है।

ख) मसीही सैनिकों के लिए भी यही सच है। शैतान के सबसे आसान लक्ष्य ऐसे मसीही हैं जो दूसरों के साथ संगति में नहीं होते हैं।

ग) इस प्रकार, १ कुरिन्थियों ५:५ में हम किसी से संगति वापस लेने के सन्दर्भ में पढ़ते हैं कि यह "उसे शैतान के हाथ में सौंप देने" जैसा है।

२) मसीही सैनिक का सबसे बड़ा बचाव अन्य मसीही सैनिकों के साथ एकता है। अकेले युद्ध लड़ने की कोशिश मत कीजिये। याद रखें, कलीसिया को परमेश्वर की सेना कहा जाता है, परमेश्वर का सैनिक नहीं।

टिप्पणियाँ -

घ. रोटी तोड़ना।

१) धार्मिक अनुष्ठान।

क) प्रभु भोज और बपतिस्मा निश्चित रूप से किसी भी मसीही सैनिक की रक्षा को मज़बूत करते हैं।

ख) धार्मिक अनुष्ठान एक ऐसा तरीका प्रदान करते हैं जिससे सैनिक अधिकारी के साथ अपनी पहचान बना सके। वह उस अधिकारी के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित कर सकता है। जब वह ऐसा करता है तो वह अपनी प्रतिबद्धता अपनी रक्षा को मज़बूत करता है।

२) यूकरिस्टिया का अर्थ।

क) यूकरिस्टिया —प्रभु भोज—का अर्थ धन्यवाद देना है। यह स्तुति और आराधना की गतिविधियों की ओर इशारा करता है।

ख) स्तुति और आराधना मसीही की रक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शैतान और दुष्टात्माएं परमेश्वर की आराधना को सुनना और उसकी उपस्थिति में बने रहने को सहन नहीं कर सकते।

(१) इस बिंदु के सम्बन्ध में निर्गमन १७:८-१३ के संभावित प्रभावों पर विचार करें।

(२) यहूदा (स्तुति) को पहले भेजने के पुराने नियम के अभ्यास के निहितार्थ पर भी विचार करें (गिनती २:३,९ देखें)।

ङ. प्रार्थना।

१) एक मसीही सैनिक जो प्रार्थना नहीं करता है वह उस सैनिक की तरह है जो अपनी आपूर्ति के मार्गों को काट देता है। यह एक स्वयं लगाये गए प्रतिबन्ध की तरह है।

२) आत्मिक युद्ध में पवित्र शास्त्र की प्रार्थनाएँ विशेष रूप से प्रभावी होती हैं।

क) यह वह जगह है जहाँ मसीही सैनिक परमेश्वर के वचन को परमेश्वर से प्रार्थना के रूप में कहता, या वास्तव में बुराई, या प्रलोभन को रोकता है।

ख) वायदों, सुरक्षा और ताकत का दावा करने के लिए बाइबल का प्रयोग करें।

३) पवित्रशास्त्र की प्रार्थनाएँ और वचन हमारे अपने शब्दों से कहीं अधिक शक्तिशाली और सुस्थापित हैं। जंगल के प्रलोभनों में, हम देखते हैं कि यीशु ने परमेश्वर के वचन को रक्षा की तलवार के रूप में इस्तेमाल किया (मत्ती ३)।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक शैतानी हमले के बीच में मसीही सैनिक इफिसियों १:१८-२१ और १ यूहन्ना ४:४ का उपयोग प्रार्थना करने के लिए कर सकता है:

प्रिय परमेश्वर जो सभी ईश्वरों से ऊपर है, आप उस से बड़े हैं जो इस संसार में है। आप बहुत मज़बूत हैं। शत्रु पराजित होता है। मुझमें अपनी सामर्थ्य की उस महानता को प्रगट कीजिये जो मुझ में है। मैं कहता हूँ कि मुझ में वही सामर्थ्य है जो सभी शासन और अधिकार और शक्ति और प्रभुत्व और प्रत्येक नाम से ऊपर है, जो इस युग बल्कि आने वाले में युग भी है। यीशु की विजय के द्वारा मुझे आपकी सुरक्षा और किसी भी दुष्टात्मा पर विजय प्राप्त होती है। यीशु के नाम में मैं इस प्रार्थना को माँगता हूँ। आमीन।

अपना उदाहरण लिखें:

२. धार्मिकता और पवित्रता।

क. आप कौन हैं और कैसे रहते हैं।

१) चरण-दर-चरण आज्ञाओं का पालन करने की तुलना में आत्मिक युद्ध की रणनीति अधिक गहन है।

२) आत्मिक युद्ध में सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि युद्ध करने वाला व्यक्ति किस प्रकार तत्परता से जीवन व्यतीत कर रहा है!

टिप्पणियाँ -

३) प्रेरितों १९:१५ का अध्ययन करें।

क) जैसा कि स्किकवा के सात पुत्रों को पता चला, केवल यीशु के नाम का उपयोग करने से कोई व्यक्ति दुष्टात्मा को भगाने के योग्य नहीं हो जाता।

ख) वह व्यक्ति जो यह शब्द बोल रहा है यदि धर्मी नहीं है तो यह बेकार है। यह जादू पर आधारित नहीं है। यह यीशु के साथ सम्बन्धों पर आधारित है। अगर वह सम्बन्ध नहीं होगा, तो शब्द प्रभावी नहीं होंगे।

ग) हम इस अनुच्छेद से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि दुष्टात्मा भगाने की क्षमता उसे भगाने वाले के जीवन की गुणवत्ता पर निर्भर करती है (हम धार्मिकता और पवित्रता कह सकते हैं)। हमें यीशु को जानना चाहिए और उसके साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध बनाना चाहिए ताकि वह इस तरह से हमारे जीवन का उपयोग कर सकें।

ख. धार्मिकता (इफिसियों ६:१४ देखें)।

१) धार्मिकता एक झिलम की तरह है। यह झिलम का एक भारी टुकड़ा है जिसका उपयोग शत्रु के विरुद्ध हमारी रक्षा के लिए किया जाता है। यह हमारी रक्षा करता है।

२) एक धर्मी जीवन एक मसीही विश्वासी को विश्वास के साथ शत्रु के क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति देता है। वह परमेश्वर के ठीक सामने होता है, और इसलिए परमेश्वर से वह प्राप्त कर सकता है जो विजय के लिए आवश्यक है।

३) दूसरी ओर, अनुशासनहीन मसीही प्रभावशाली सैनिक नहीं होते। जिनके पास धार्मिकता की बजाय पापपूर्ण सुखों की अधिक भूख और प्यास है, वे स्वयं को असुरक्षित छोड़ देते हैं, और यहाँ तक कि शत्रु द्वारा व्याकुल होने के खतरे में भी हो सकते हैं (१ कुरिन्थियों ९:२७ के निहितार्थों पर भी विचार करें)।

ग. पवित्रता (मत्ती ५:८ देखें)।

१) एक मसीही विश्वासी के बचाव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है अच्छे और बुरे, शैतान और परमेश्वर को पहचानने की उसकी क्षमता।

२) पवित्रता मसीही को परमेश्वर को देखने में सक्षम बनाती है और इसलिए, अच्छे और बुरे के बीच अंतर करती है। आत्मिक युद्ध में विवेक आवश्यक है, खासकर तब जब हम एक ऐसे शत्रु से लड़ रहे हैं जो वेश बदलने और छल का स्वामी है।

३) हमें आत्मिक युद्ध में उद्देश्यों की शुद्धता पर भी विचार करना चाहिए।

आत्मिक युद्ध

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

क्या हम आत्मिक युद्ध में इसलिए भाग लेना चाहते हैं क्योंकि यह रोमांचक है? क्या हम यीशु की महिमा से अधिक सामर्थ्य की भावना चाहते हैं? क्या हम चाहते हैं कि अन्य लोग परमेश्वर के उन महान लोगों के रूप में देखे जाएँ जिनके पास दुष्टात्माओं के ऊपर अधिकार है, या क्या हम चाहते हैं कि दूसरों को छुटकारा मिले और वे मसीह की सामर्थ्य को देखें? हमारे उद्देश्य क्या हैं?

१ कुरिन्थियों ९:२७ का अध्ययन करें, फिर इस पद पर मनन करते हुए इनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें। हमें आत्मिक युद्ध में घमंड से बचना चाहिए। केवल परमेश्वर को महिमा मिलनी चाहिए।

३. सबसे बड़ी सुरक्षा स्वयं की मृत्यु है।

क. जिसकी मृत्यु हो चुकी है उसे मारा नहीं जा सकता।

१) वह मसीही जो स्वयं के लिए मर गया और उसने सब कुछ मसीह को दे दिया, वह शत्रु से अच्छी तरह सुरक्षित है।

क) शैतान पूरी तरह से समर्पित, प्रतिबद्ध और निस्वार्थ मसीहियों से विफ़ल हो जाता है।

ख) आपके विरुद्ध शैतान का सबसे बड़ा हथियार आप स्वयं हैं। वह आपके स्वार्थ को जाल की तरह इस्तेमाल करता है। जब एक मसीही निस्वार्थ जीवन व्यतीत करता है तो वह अपने शत्रु का सबसे बड़ा हथियार छीन लेता है।

२) इब्रानियों २:१४,१५ पढ़ें।

क) शैतान तब सामर्थ्यहीन हो जाता है जब वह मृत्यु की सामर्थ्य का लाभ नहीं उठा सकता।

ख) मसीही जो स्वयं के लिए मर चुके हैं वे मृत्यु से नहीं डरते क्योंकि वे पहले ही मर चुके हैं। इस प्रकार, शैतान अपनी लड़ाई में गंभीर रूप से अक्षम है।

३) किसी को डराना या धमकाना तब कठिन होता है जब आप अंतिम खतरे को भी समाप्त कर देते हैं (उसे मारना) और कोई ख़तरा बाकी नहीं रहता है (फिलिप्पियों १:२१ देखें)।

ख. एक "त्यागा हुआ जीवन" न केवल शैतान को निहत्था करता है, बल्कि यह हमें उस गुप्त हथियार तक पहुँच प्रदान करता है जिसका उपयोग स्वयं यीशु ने किया था: निःस्वार्थता।

टिप्पणियाँ -

४. हम इफिसियों ६:१०-१८ का अध्ययन करके अपने रक्षात्मक हथियारों के बारे में कुछ सारांश अवलोकन कर सकते हैं।

क. यह अनुच्छेद उन सभी के सारांश के रूप में कार्य करता है जो हमने पहले कहा है। यह एक मसीही के हथियार को प्रतीकात्मक रूप से संदर्भित करके एक मसीही की रक्षा का सारांश देता है।

ख. हमें उस बात पर ध्यान देना चाहिए जो पौलुस परमेश्वर के पूर्ण हथियार के विषय में कहते हैं (पद ११, १३)।

१) हथियार को बांधे रखना महत्वपूर्ण है।

२) यह एक सक्रिय प्रक्रिया है। हथियार को बांधना (पद ११) और उठाना (पद १३) चाहिए।

ग. हमें हथियार और ताकि तुम (पद ११,१३) के बीच सम्बन्ध पर बल देना चाहिए। रक्षात्मक होना एक सफ़ल सैनिक बनने का परिणाम होता है।

घ. हमें शैतान के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होने के वचन के दोहराव पर ध्यान देना चाहिए (पद ११,१३,१४)। यह रक्षा का विचार है। पीछे हटने का नहीं है। यह शत्रु का विरोध करना है और उसकी प्रगति से बचना है। मसीहियों को अपने बचाव के लिए आश्वस्त होना चाहिए। उन्हें सतर्क भी नहीं होना चाहिए (फिलिप्पियों १:२७,२८)।

ङ. पद १२ में "मल्लयुद्ध" के लिए ग्रीक शब्द लिया गया है जो नए नियम में किसी अन्य स्थान पर नहीं मिलता है। यह एक ऐसा शब्द है जो एक हाथ के मुकाबले (कुश्ती) को संदर्भित करता है।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

आधुनिक समय का युद्ध (जो जटिल तकनीक का उपयोग करता है) एक लंबा युद्ध है। कुछ सैनिक यह नहीं देखते कि वे किन्हें मार रहे हैं। वे बस एक कम्प्यूटरीकृत बटन दबाते हैं जो उनके शत्रु को नष्ट करने के लिए एक मिसाइल भेजता है। इस प्रकार के "आसान" युद्ध से आत्मिक युद्ध की गलतफहमी हो सकती है।

हालाँकि, आत्मिक युद्ध आधुनिक समय के तकनीकी युद्ध की तरह नहीं है। आत्मिक युद्ध आमने-सामने के युद्ध जैसा है। यह कठिन कार्य है। यह बहुत ही वास्तविक और नज़दीक युद्ध है। आधुनिक समय का युद्ध आत्मिक युद्ध की वास्तविकता की धारणा को कम कर देता है।

दुर्भाग्य से, कुछ मसीही सैनिक आत्मिक युद्ध को ऐसे लड़ने की कोशिश करते हैं जैसे कि वे एक आधुनिक युद्ध लड़ रहे हों। वे युद्ध के दौरान सहज रहना चाहते हैं। वे पसीना बहाना नहीं चाहते। उन्हें शत्रु के आमने-सामने आने का विचार पसंद नहीं है। वे चाहते हैं कि युद्ध दूर से ही होता रहे ताकि वे समय-समय पर बटन दबाते रहें।

हालाँकि, मसीही सैनिक को दैनिक लड़ाई और निकटता की लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह एक वास्तविक युद्ध है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

च. हम देख सकते हैं कि पद १८ में प्रार्थना करने का निर्देश सीधे तौर पर हथियार बांधने से जुड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस कह रहें हैं कि प्रार्थना के द्वारा हथियार बांधे जाते हैं।

१) आप उद्धार का टोप कैसे पहनते हैं? आप विश्वास की ढाल कैसे लेते हैं?

२) उत्तर का एक बड़ा हिस्सा ऐसा प्रतीत होता है: सभी प्रार्थनाओं के साथ।

ग. आत्मिक युद्ध के आक्रामक हथियार।

१. परमेश्वर का वचन।

क. शैतान झूठा है (यूहन्ना ८:४४) जो मसीहियों पर आरोप लगाने की कोशिश करता है (प्रकाशितवाक्य १२:१०)।

१) मसीही सैनिक को दोष लगाने वाले के झूठ को इस सच्चाई से बदलना चाहिए कि वह अब अपराधमुक्त हो गया है (रोमियों 8:1)।

२) परमेश्वर के सत्य को शैतान के विरुद्ध एक आक्रामक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

ख. हम कह सकते हैं कि मसीही सैनिक परमेश्वर के वचन के साथ अपने शस्त्रागार का निर्माण करता है, और उस वचन को विश्वास में बोलकर अपने हथियारों को चलाता है।

ग. निम्नलिखित बाइबिल सत्य की प्रगति है जिस पर एक मसीही सैनिक शत्रु पर हमला करने के लिए दृढ़ खड़ा हो सकता है:

१) यीशु की विजय विश्वासियों को दृढ खड़े होने के लिए एक मज़बूत नींव प्रदान करती है और हमारी विजय को सुनिश्चित करती है (मत्ती ४:१-११; रोमियों ५:१२-१९)।

२) यीशु शैतान के कार्य को नष्ट करने आये (१ यूहन्ना ३:८; कुलुस्सियों २:१५; इब्रानियों २:१४,१५)।

३) विजय का श्रेय विश्वासियों को दिया जाता है (इफिसियों १:१९-२३; २:४-६; इब्रानियों १:१३; १ पतरस ३:२२)।

४) विश्वासियों को कानूनी तौर पर उद्धार के द्वारा शैतान की शक्ति से स्वतंत्र किया जाता है (प्रेरितों के काम २६:१८; लूका १०:१७; २ कुरिन्थियों ४:४; इफिसियों २:१-३; कुलुस्सियों १:१३)।

५) यह स्वतंत्रता परमेश्वर के अधीन रहने के द्वारा (याकूब ४:७; १ पतरस ५:८), शैतान को अवसर न देने के द्वारा (इफिसियों ४:२७), और एक सैनिक के हथियार को धारण करने के द्वारा (इफिसियों ६:१०-१८) मिलती है।

टिप्पणियाँ -

घ. परमेश्वर का वचन जीवित और सामर्थी है।

१) जब पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में परमेश्वर के वचन को बोला जाता है, तो यह शत्रु को सामने आने के लिए मजबूर करता है और शैतान के प्रभाव को उजागर करता है (इफिसियों ५:६-१४ देखें)।

क) इस प्रकार, वचन मसीही सैनिक के अंदर रहना चाहिए।

ख) इसे याद, इसका अध्ययन और इस पर मनन करना चाहिए। आत्मिक युद्ध में सफलता के लिए यह आवश्यक है। हमें ध्यान देना चाहिए कि यह परमेश्वर का याद किया हुआ वचन था जिसे यीशु ने जंगल में शैतान के विरुद्ध अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था (मत्ती ४:४,७,१० देखें)।

२) हर बार जब मसीही सैनिक परमेश्वर के वचन को अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल करता है, तो वह स्वयं और अपनी स्थिति को मज़बूत करता है।

३) उस बढ़ाव पर ध्यान दें जो यीशु स्वयं को शैतान के सापेक्ष एक मज़बूत स्थिति में रखने के सन्दर्भ में करते हैं।

क) पहला, (मत्ती ४:४) यीशु ने केवल परमेश्वर के वचन को बोला: यह लिखा है...

ख) दूसरा, (मत्ती ४:७) यीशु ने शैतान का विरोध किया और परमेश्वर के वचन को बोला: यह भी लिखा है...

ग) तीसरा, (मत्ती ४:१०) यीशु ने शैतान पर हमला किया और परमेश्वर के वचन को बोला: दूर हो जा, शैतान! क्योंकि लिखा है...

(१) यीशु बोलने, विरोध करने और बोलने, आक्रमण करने और बोलने की ओर बढ़े।

(२) परमेश्वर के वचन की प्रत्येक घोषणा युद्ध में यीशु की स्थिति को मज़बूत करती है।

(३) प्रत्येक विजय हमें अगली लड़ाई के लिए मज़बूत बनाती है।

टिप्पणियाँ -

२. विश्वासी का अधिकार।

क. जैसा कि हमने ऊपर देखा, शैतान की ओर से जितने अधिक हमले हुए, यीशु के द्वारा उतना ही अधिक अधिकार का प्रयोग किया गया। अंत में, यीशु ने आज्ञा के वचन को अधिकार के साथ प्रयोग किया और यह कहा, दूर हो जा, शैतान!

१) यीशु के द्वारा, मसीही सैनिक के पास अधिकार के साथ आज्ञा के यही शब्द हैं।

२) विश्वासियों को आज छुटकारे की सेवकाई (दुष्टात्माओं को बाहर निकालना) में शामिल होना चाहिए।

३) निम्नलिखित तीन बिंदुओं का उपयोग यह दिखाने के लिए किया जा सकता है कि आज छुटकारे की सेवकाई आवश्यक है:

क) यीशु का उदाहरण। यह दिखाया जा सकता है कि उनकी १/४ से अधिक सेवकाई में छुटकारे शामिल थे।

ख) विश्वासियों को यीशु द्वारा छुटकारे की सेवकाई की आज्ञा दी जाती है (मत्ती १०:१,८; लूका १०:१७-२०; मरकुस १६:१७ देखें)।

ग) यीशु के चेलों का उदाहरण। उनके चेले इस सेवकाई में व्यस्त थे (प्रेरितों के काम ८:६,७; १६:१६-१८ देखें)।

४) अंत में आधुनिक समय की छुटकारे की सेवकाई की वैधता के सम्बन्ध में यूहन्ना १४:१२ के स्पष्ट निहितार्थों पर विचार करें।

ख. मत्ती १७:१४-२१ पढ़ें।

१) विश्वास के बिना अपने अधिकार का एहसास करना असंभव है।

२) विश्वास और अधिकार अनिवार्य रूप से एक साथ मौजूद हैं।

ग. क्योंकि हमारे पास अधिकार है, हमें आक्रामक (आक्रामक सैनिकों) होना चाहिए।

१) शैतान हमें परेशान करने की कोशिश कर सकता है।

२) वह हमें इतना सहज करने का भी प्रयास कर सकता है कि हम उसे परेशान न करें।

३) हमें अपने अधिकार के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए और अंधकार के गढ़ों पर आक्रमण करने के कार्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

जब मसीही परमेश्वर के कार्यों को करने की कोशिश करते हैं तो उन्हें चिंता हो सकती है। हालाँकि, हम आलसी हो रहे हैं यदि हम यह अपेक्षा करते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए हमारा कार्य करेंगे।

शत्रु पर हमला करना एक मसीही सैनिक का कार्य है। हमें उस अधिकार का उपयोग करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

घ. छुटकारे की सेवकाई और पवित्र आत्मा (प्रेरितों के काम ४:३१ देखें)।

१) आत्मा से परिपूर्ण होने का सीधा सम्बन्ध विश्वासी के अधिकार से है।

२) हम जितना अधिक आत्मा से भरे होंगे, उतना ही अधिक अधिकार हम अपनी सेवकाई में महसूस करेंगे।

३. यीशु का नाम (कुलुस्सियों ३:१७ देखें)।

क. यीशु के नाम का प्रयोग जादू पर आधारित नहीं है। यह केवल तभी आधिकारिक होता है जब इसे एक सच्चे प्रतिनिधि द्वारा लिया जाता है (प्रेरितों के काम १९:१३-१६ देखें)।

१) दूतावास धोखेबाज की नहीं सुनती।

२) यह एक सच्चे राजदूत का पालन करता है क्योंकि यह उस व्यक्ति (देश) का पालन करेगा जिसका प्रतिनिधित्व राजदूत कर रहा है।

ख. यीशु के नाम में प्रार्थना करना विश्वासी के लिए एक परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया कानूनी अधिकार है। (यूहन्ना १४:१३; १६:२४ देखें)।

ग. यीशु के नाम से प्रार्थना करने से यीशु के विषय में सब कुछ प्रगट होता है। निश्चित रूप से, जब हम बुराई के विरुद्ध खड़े होते हैं तो हमें वह सब कुछ प्रस्तुत करना चाहिए जो यीशु हैं। इस प्रकार, यीशु का नाम कोई जादू का मंत्र नहीं है। यह एक व्यक्ति को दर्शाता है।

टिप्पणियाँ -

घ. आत्मिक हथियारों के विषय में अन्तिम विचार।

१. एक मसीही सैनिक के हथियार उसके अपने नहीं हैं। वे परमेश्वर के हैं!

क. जब वह धार्मिकता को पहिनता है, तो वह परमेश्वर की धार्मिकता है।

ख. जब वह वचन का उपयोग करता है, तो वह परमेश्वर का वचन होता है।

२. उसी समय, यह वह है जो सैनिक है। उसे बाहर जाकर लड़ना चाहिए। जब कोई आदेश दिया जाता है, तो उससे आज्ञाकारी, विश्वासयोग्य और वफादार होने की अपेक्षा की जाती है।

३. मसीही सैनिक विश्वास के द्वारा जीता है। यह विश्वास की ढाल है जिसे वह युद्ध में अपने साथ लेकर चलता है।

क. रोमन सैनिकों के पास वे ढालें थीं जो उन्हें सिर से पैर तक ढाकी हुई थीं। हालाँकि, इससे उनकी पीठ नहीं ढकी थी। कोई भगोड़ा नहीं हो सकता! विश्वास वापस नहीं लौटता।

ख. विश्वास अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है (इब्रानियों ११:१ देखें)।

४. यीशु एक सफ़ल आत्मिक सेना की कुंजी हैं।

क. ऐसा कहा गया है कि शैतान को अपने जीवन से दूर रखने का सबसे अच्छा तरीका यीशु को अपने जीवन में रखना है।

ख. दोनों आपस में नहीं मिलते। आप दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते। जिसके प्रति आप अधीन होंगे वह आपका स्वामी होगा।

IV. आत्मिक युद्ध के साथ सेवकाई के अनुभव।

लेखक की टिप्पणी:

हम कुछ सच्ची कहानियों और सेवकों के अनुभवों को जोड़कर पाठ्यक्रम का समापन करते हैं क्योंकि वे आत्मिक युद्ध में शामिल थे। आत्मिक युद्ध में शामिल मसीही सैनिकों के लिए व्यक्तिगत विवरणों के साथ कई सिद्धांत दिए गए हैं।

आत्मिक युद्ध

टिप्पणियाँ -

क. आत्मिक युद्ध के विवरण और सिद्धांत।

१. एक सेवक कहते हैं कि "छोटी" लड़ाइयों के लिए विश्वास रखने की तुलना में "बड़ी" लड़ाइयों के लिए विश्वास करना आसान लगता है।

क. यह सामान्य समस्या आत्मिक युद्ध में दृढ़ता और निरंतरता की आवश्यकता की ओर इशारा करती है। कभी-कभी होने वाली बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में लड़ने के लिए प्रेरित होना एक बात है। प्रतिदिन होने वाली छोटी-छोटी झड़पों में लड़ने के लिए प्रेरित होना दूसरी बात है।

ख. इस समस्या का कारण यह है कि बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ अकसर हमारी लाचारी को उजागर करती हैं। हमारे पास परमेश्वर पर निर्भर रहने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। हमारे पास विश्वास से चलने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। ऐसा लगता है कि छोटी-छोटी लड़ाइयाँ अकसर हमारी अपनी क्षमताओं से जीती जाती हैं। हम स्वयं पर निर्भर रहने लगते हैं। हमारा विश्वास अवरुद्ध है।

लेखक का उदाहरण:

एक बार एक व्यक्ति था जो लकड़ी के डंडे पर नियाग्रा फॉल्स (उत्तरी अमेरिका का सबसे बड़ा जलप्रपात) के ऊपर चढ़ गया था। उसे एक खरोंच तक नहीं आई। उस अविश्वसनीय घटना के कुछ समय बाद, वह सड़क पर चल रहा था और संतरे के छिलके पर फिसल गया। पैर टूट जाने पर उसे अस्पताल ले जाया गया।

अपना उदाहरण लिखें:

ग. कभी-कभी मसीही सैनिक बड़े युद्धों में तो विजयी हो जाते हैं, परन्तु छोटी-छोटी लड़ाइयों में हार जाते हैं।

घ. हमें अपने युद्ध में सुसंगत और दृढ़ रहना चाहिए। हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम छोटे-छोटे झगड़ों के बीच भी परमेश्वर के बिना असहाय हैं।

टिप्पणियाँ -

२. एक अन्य सेवक ने उस समय की एक कहानी सुनाई कि उन्होंने एक व्यक्ति को "कामुकता की आत्मा" से स्वतंत्र करने के लिए महीनों तक प्रार्थना की थी। उन्होंने अपना ज़्यादातर समय दुष्टात्मा पर चिल्लाने और उसे डाँटने में बिताया। एक रात आत्मा ने उन्हें यह दिखाना शुरू किया कि शैतान समस्या का स्रोत नहीं था। समस्या का स्रोत व्यक्ति का स्वयं अपना मांस/देह थी। उस मामले में डाँटने के लिए कोई दुष्टात्मा थी ही नहीं। देह को मारने की आवश्यकता थी।

क. अपने निष्कर्ष के बारे में उन्होंने उस व्यक्ति से बात की जिसकी वह सेवकाई कर रहे थे। वह व्यक्ति पूरी तरह से सहमत था कि यह एक दुष्टात्मा नहीं थी, बल्कि यह उसका अपना मांस था। जब सेवक ने उससे पूछा कि उसने पहले कुछ क्यों नहीं कहा, तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं आशा कर रहा था कि आप मांस निकाल सकते हो!"

ख. यहाँ हमें आत्मिक युद्ध में आत्माओं की समझ के महत्व पर विचार करना चाहिए। आप दुष्टात्माओं को क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते और आप मांस को बाहर नहीं निकाल सकते।

लेखक का उदाहरण:

निम्नलिखित काल्पनिक कहानी सेवकाई की कहानी को बढ़ाती है:

शैतान परमेश्वर के पास आया और शिकायत की कि वह ऊब गया है। उसने कहा कि उसके पास करने के लिए कोई कार्य नहीं है और वह चाहता है कि परमेश्वर उसे कुछ कार्य करने के लिए दे। परमेश्वर उसकी बात को समझ नहीं पाए। उन्होंने शैतान से कहा कि उसके पास पहले से ही लोगों को पाप में ले जाने का कार्य है। परमेश्वर ने उससे कहा कि उसे और अधिक प्रयास करना होगा। शैतान ने उत्तर दिया कि यह इतना आसान नहीं है। उसने परमेश्वर को यह कहकर अपनी शिकायत समाप्त कर दी कि इससे पहले कि वह किसी से कुछ कहे, वह व्यक्ति पहले ही पाप कर चुका था!

उसने कहा कि वह स्वयं को बेबस महसूस कर रहा है।

कभी-कभी हम शैतान को बहुत अधिक श्रेय देते हैं। अकसर, हमें अपने माँस से युद्ध करना चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

ग. व्यावहारिक सिद्धांत।

टिप्पणियाँ -

१. स्वर्गदूतों की वास्तविकता।

क. एक सेवक ने उस समय की कहानी सुनाई जब वह एक क्रांति की शुरुआत के दौरान अफ्रीका के मध्य में थे। उनके चारों तरफ मशीनगनों की आवाज़ें आ रही थीं। लोग को मारा जा रहा था। उन्होंने परमेश्वर से स्वयं को कुछ ऐसा दिखाने के लिए कहा जो उनकी सुरक्षा का संकेत हो। उस रात वह उठे और देखा कि उनकी मेज़ पर दो स्वर्गदूत बैठे हुए हैं। परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे उनकी रक्षा के लिए वहाँ उपस्थित हैं।

ख. एक अन्य सेवक ने कहानी सुनाई कि कैसे युगांडा में ईदी अमीन की अगुवाई के दौरान सैनिक उन्हें मारने के लिए आए थे। वे उनके घर में घुसे और जबरदस्ती एक कोने में ले गए। सैनिकों में से एक ने सेवक के सिर पर प्रहार करने के लिए अपना छुरी को उठा लिया। उसी समय, सेवक ने देखा कि एक स्वर्गदूत सैनिक के हाथ घुमा रहा है, जिससे उसके सिर पर छुरी का वह हिस्सा जो नुकीला नहीं था, आ लगा। उनपर हमला तो किया गया लेकिन मारा नहीं गया। सैनिक घर से भाग गए क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। परमेश्वर ने उन्हें बचाने के लिए एक स्वर्गदूत का इस्तेमाल किया।

२. दुष्टात्माओं के नाम।

क. एक कलीसिया में एक सेवक बोल रहे थे कि एक व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होकर, अपनी बाहों को हिंसक रूप से घुमाने लगा। सेवक प्रार्थना करने लगे। अचानक उन्हें आत्मा ने कहा कि यह हिंसा की आत्मा है। उन्होंने तुरंत हिंसक आत्मा को डांटा और वह व्यक्ति स्तब्ध रह गया। एक सेकंड बाद वह व्यक्ति मुस्कुराने लगा। उसने सेवक को गले लगाया और "उस दुष्टात्मा को अपने अन्दर से बाहर निकालने" के लिए धन्यवाद दिया।

३. पवित्र शास्त्र का उपयोग करना।

क. एक सेवक ने एक दुष्टात्मा को बाहर निकालने के लिए पूरी रात किये गये युद्ध के विषय में बताया। अंत में मसीही पीड़ित व्यक्ति के आसपास इकट्ठे हुए और पवित्रशास्त्र के गीतों के साथ परमेश्वर की आराधना करने लगे। सेवक ने यीशु के लहू और शैतान पर उसकी विजय के विषय में पवित्रशास्त्र में से पढ़ना शुरू किया। दुष्टात्मा यह सुनकर चिल्लाई और बाहर निकल गयी।

ख. बेशक और भी कई सच्ची कहानियाँ हैं जिन्हें यहाँ बताया जा सकता है। इस खंड का उद्देश्य केवल कुछ कहानियों को बताना था जो कुछ विशेष प्रकार की कक्षा में होने वाली चर्चा को बढ़ावा देंगी।

टिप्पणियाँ -